




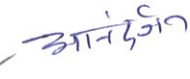

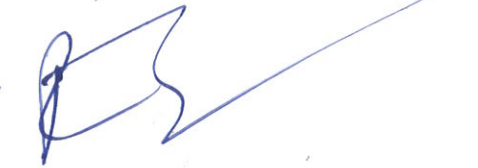
Eklavya University

Master of Arts

(Sanskrit)

Curriculum

(2020-2021 admitted students)

Master of Arts- Sanskrit

VISION STATEMENT OF EKLAVYA UNIVERSITY

Eklavya University, will transform lives and communities through learning.

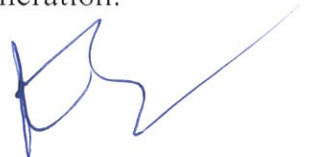
MISSION STATEMENT OF EKLAVYA UNIVERSITY

- Nurture achievers in life and careers through a value based, industry relevant and future ready education.
- Emphasize research, interdisciplinary learning, and practical hands on education.
- Equip every student with the required social and technical skills to achieve employment generation.
- Provide a holistic education deeply rooted in the ways of the traditional Gurukul system.
- Bring quality education within the reach of every individual, by committing to the achievement and maintenance of excellence in education, research and innovation.
- Create and disseminate knowledge through research and creative inquiry.
- Serve students by teaching them problem solving, leadership and teamwork skills, lateral thinking, commitment to quality and ethical behaviour.
- Create a diverse community, open to the exchange of ideas, where discovery, creativity, and personal and professional development is encouraged and can flourish.
- Contribute to the social fabric and economic health of the Bundelkhand region, the state and the country at large, by enhancing and facilitating economic empowerment, providing equal opportunities and employment generation.



आनंद जी





- मूल्य आधारित शिक्षा के द्वारा आदर्श जीवन, आजीविका और उद्योग को पोषित करना।
- अनुसंधान और विषय के गूढ़ ज्ञान हेतु शिक्षा को व्यावहारिक बनाना।
- सामाजिक एवं तकनीकी कौशल के माध्यम से छात्रों को रोजगार हेतु तैयार करना।
- पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली में निहित ज्ञान की समग्र शिक्षा प्रदान कर छात्रों को उन्नत जीवन एवं रोजगार के लिए तैयार करना।
- अनुसंधान और रचनात्मक परीक्षण के माध्यम से ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना।
- शिक्षा; अनुसंधान और नवाचारों में उत्कृष्टता एवं प्रबंधन के लिए प्रतिबद्धता के साथ शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच में लाना।
- छात्रों में व्यवहारिक एवं नैतिक शिक्षा के माध्यम से समस्या समाधान कौशल, सामुदायिक नेतृत्व कौशल एवं सामूहिक सामाजिक सेवा कार्य के लिए प्रतिबद्ध करना।
- समान अवसर एवं रोजगार को दृष्टि में रखकर छात्रों को आर्थिक सशक्तीकरण की ओर अग्रसर करना।
- शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता के माध्यम से व्यक्ति की जीवन शैली और पद्धति को समुन्नत करना।



आनंद सिंह



VISION STATEMENT OF DEPARTMENT

Transforming life through excellence in education and research

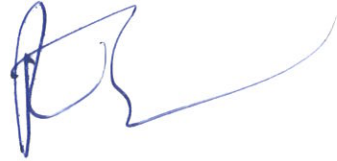
MISSION STATEMENT OF DEPARTMENT

Mission is to develop innovative, globally competitive and socially responsible leaders.



अभिषेक

Ashishba



Master of Arts – Sanskrit

PROGRAMME EDUCATIONAL OBJECTIVES (PEOs)

1. After completion of Post graduation in Sanskrit, students are provided with the opportunity to study and research in a specific area in Sanskrit literature.
 2. Critical and comparative research is encouraged.
 3. The research undertaken helps the candidate to explore himself and be useful to the society at large.
- संस्कृत विषय में स्नातक (बी.ए./शास्त्री) के उपरान्त छात्रों को संस्कृत साहित्य में विशिष्ट अध्ययन एवं शोध के लिए अवसर प्राप्त होंगे।
 - संस्कृत भाषा के विशिष्ट ज्ञान से महत्वपूर्ण एवं तुलनात्मक शोध को प्रोत्साहन मिलेगा।
 - संस्कृत भाषा में किया गया अध्ययन एवं स्वयं के द्वारा किये गए शोध – अन्वेषण से स्वयं के बौद्धिक स्तर को राष्ट्रीय – अंतर्राष्ट्रीय और सामाजिक – आध्यात्मिक पटल पर स्थापित कर सकेगा।



अनंदसिंह

Ashish



Master of Arts - Sanskrit

PROGRAMME OUTCOMES (POs)

- 1- The students acquire in depth knowledge in the field of social sciences, literature and humanities which make them sensitive and sensible enough to solve the issues related with mankind.
- 2- The postgraduates will be acquainted with the social, economical, ancient Indian history, historical, geographical, political, ideological and philosophical tradition and thinking of their respective subjects.
- 3- The program also empowers the post-graduates to appear for various competitive examinations or choose the any post graduate or research programme of their choice.
- 4- The M. A. program enables the students to acquire the knowledge with human values framing the base to deal with various problems in life with courage and humanity.
- 5- The students will be ignited enough through the knowledge of the special PG programme to think and act over for the solution of various issues prevailed in the human life to make this world better than ever.
- 6- Through the PG programme the students will come know about research in their respective subject. It may also provide the information to the students for collection of Data, enquiry, primary and secondary methods of collection of data, classification and tabulation of data. Students get knowledge of various research methods and can realize the importance of research to find solutions of a specific issue.
- 7- Reasonable understanding of multi-disciplinary relevance of literature of Sanskrit like Veda, Philosophy, Grammar, Kavya, Smitisastra etc.



आनंद जैस



- संस्कृत भाषा में स्नातकोत्तर (एम.ए./आचार्य) अध्ययन से छात्रों में समाज, संस्कृति, इतिहास, धर्म, दर्शन, विज्ञान और मानविकी के क्षेत्र में विशिष्ट ज्ञान अर्जित कर सामाजिक एवं मानव समस्याओं के समाधान करने हेतु संवेदनशीलता तथा समझ विकसित होगी।
- संस्कृत भाषा में स्नातकोत्तर होने से छात्रों में सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, राजनैतिक वैचारिक और दार्शनिक परंपरा तथा उनसे संबंधित विषयों की सोच विकसित एवं पल्लवित होगी।
- यह कार्यक्रम छात्रों में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने एवं शोध कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान करेगा।
- संस्कृत भाषा में स्नातकोत्तर करने के उपरान्त छात्र एम. फिल, पी-एच.डी. आदि उपाधियां प्राप्त कर उस ज्ञान से विशिष्ट मुद्दों का समाधान एवं नवाचार कर सकेंगे।
- संस्कृत भाषा में स्नातकोत्तर अध्ययन से छात्रों में वेद, पुराण, आगम, काव्य, नाट्यशास्त्र, व्याकरण, पाण्डुलिपि-पुरालिपि एवं संस्कृत की सभी विधाओं के साहित्य के पठन-पाठन, सम्भाषण एवं संपादन कला का विकास होगा।

आनंद

Prayansh

Abhishek

RS

Master of Arts- Sanskrit PROGRAMME SPECIFIC OUTCOMES (PSOs)

- 1 Provide adequate knowledge of Sanskrit language.
 - 2 Understanding ancient scriptures written in Sanskrit, Pali & Prakrit.
 - 3 Acquire adequate knowledge of ancient Indian culture and society.
 - 4 Gain competencies and professional skills for teaching and conducting research in various fields in Sanskrit Grammar, Classical Sanskrit Literature, Vedic Literature and ancient Indian philosophy.
- संस्कृत भाषा का पर्याप्त ज्ञान अर्जित करना।
 - संस्कृत भाषा के साथ पालि और प्राकृत भाषा में रचित ग्रन्थों एवं आगम ग्रन्थों को समझना।
 - संस्कृत व्याकरण, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य का विशिष्ट अध्ययन करना।
 - प्राचीन भारतीय दर्शन— चार्वाक, जैन, बौद्ध एवं सांख्यादि षड्दर्शनों के विभिन्न पक्षों में शिक्षण और अनुसंधान के लिए दक्षता और कौशल का विकास करना।
 - संस्कृत भाषा में सम्भाषण कौशल, ग्रन्थ संपादन कौशल, लेखन—वाचन—श्रवण आदि विधाओं में पारंगत होना।



आनंदजन





Master of Arts- Sanskrit

CREDIT STRUCTURE

Category-wise Credit Distribution

Courses	Credits
Programme Core courses	36
Programme Electives	12
Subjective Presentation and Comprehensive viva	12
Project	20
Total	80

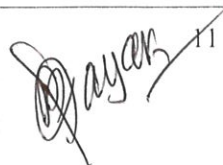
 अमरेंद्र जै
 Ashishray



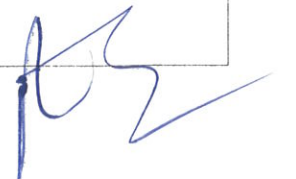
DETAILED CURRICULUM

Course code	Vedic Sahitya Ka Itihas (Paper – I)	L	T	P	C
MSANL20Y101	वैदिक साहित्य का इतिहास	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			
Course Objectives:					
<ul style="list-style-type: none"> विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना। छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना। संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना। भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना। 					
Course Outcome:					
<ul style="list-style-type: none"> संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना। संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना। 					
Student Learning Outcomes (SLO):					
<ul style="list-style-type: none"> छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना। छात्रों में भाषा के अनुकूलन की सोच विकसित होना। भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना। भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना। वेदों के गूढ़ ज्ञान का अभ्यास होना। 					
Unit - 1 वैदिक साहित्य परिचय					16
<ul style="list-style-type: none"> वैदिक साहित्य सामान्य का परिचय वैदिक वाङ्मय का इतिहास 					
Unit - 2 वैदिक काल निर्धारण –					17
वैदिक काल निर्धारण – <ul style="list-style-type: none"> ए.बेवर जैकोबी बालगंगाधर तिलक एम.विण्टरनिट्रज। भारतीय परंपरागत विचार। 					
Unit – 3 संहिता साहित्य – परिचय					18
संहिता साहित्य – परिचय <ul style="list-style-type: none"> ऋग्वेद संहिता यजुर्वेद संहिता सामवेद संहिता अथर्ववेद संहिता। 					
Unit – 4 सामान्य परिचय–					20
सामान्य परिचय– <ul style="list-style-type: none"> ब्राह्मण 					

आनंद गौरी







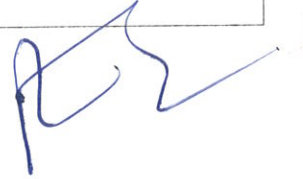
<ul style="list-style-type: none"> • आरण्यक • उपनिषद् का सामान्य परिचय 	
Unit - 5 वेदांगों का सामान्य परिचय	19
सामान्य परिचय— <ul style="list-style-type: none"> • वेदांगों का सामान्य परिचय— • शिक्षा, • व्याकरण, • निरुक्त, • कल्प, • छन्द, • ज्योतिष। 	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text Book(s) / Reference Books			
	<ol style="list-style-type: none"> 1. वैदिक वाङ्मय का इतिहास – श्री रमाकान्त शास्त्री चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी 2. वैदिक वाङ्मय एक परिशीलन – डॉ. ब्रजबिहारी चौबे 3. वैदिक संग्रह एवं व्याख्या – डॉ. बलदेवसिंह मेहरा, शिवबुक्स इंटरनेशनल, दिल्ली 4. ऋग्वेद संहिता, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी 5. यजुर्वेद संहिता, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी 6. सामवेद संहिता, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी 7. अथर्ववेद संहिता, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी 8. अभिनववेददीपिका (प्रथम सं.) डॉ. रमाकांत पाण्डेय, जगदीश पुस्तकालय जयपुर 9. निरुक्त (यास्ककृत) उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी। 10. वैदिक साहित्य – पं. बलदेव उपाध्याय। 11. भारतीय ज्योतिष, डॉ. नेमिचंद्र ज्योतिषाचार्य 12. ज्योतिष प्रवेशिका, चंद्रशेखर मिश्र, भारतीय विद्यासंस्थान, वाराणसी 		



आरंभिक

Ashish



Course code	Bhasha Vigyan Avem Vyakaran (Paper – II)	L	T	P	C
MSANL20Y102	भाषा विज्ञान एवं व्याकरण	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			
Course Objectives:					
<ul style="list-style-type: none"> • व्याकरण एवं भाषा विज्ञान की विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना। • विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना। • छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना। • संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना। • भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना। • भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना। 					
Course Outcome:					
<ul style="list-style-type: none"> • संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना। • संस्कृत भाषा की दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना। • व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना। • संस्कृत के शुद्ध वाचन की क्षमता उत्पन्न कर धारा प्रवाह संभाषण की योग्यता को विकसित करना। 					
Student Learning Outcomes (SLO):					
<ul style="list-style-type: none"> • छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना। • छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना। • भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना। • भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना। • व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ छात्र को दक्ष बनाना। • छात्रों को मौखिक एवं लिखित विचारों की अभिव्यक्ति के योग्य बनाना। 					
Unit - 1	प्रमुख व्याकरणाचार्य परिचय	19			
प्रमुख व्याकरणाचार्य परिचय – <ul style="list-style-type: none"> • पाणिनि । • कात्यायन । • पतंजलि । • भर्तृहरि । • वामनजयादित्य । • भट्टोजिदीक्षित । • नागेश भट्ट । • जैनेन्द्र । • कैयट • शाकटायन । • हेमचंद्र सूरि । • सारस्वत व्याकरणकार । 					
Unit – 2	संज्ञा प्रकरणम् परिभाषाएँ	18			
संज्ञा प्रकरणम् परिभाषाएँ – <ul style="list-style-type: none"> • संहिता, संयोग, गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, संज्ञा प्रकरणम्, नदी, धि, उपधा, अपृक्त, गति, पद, 					

विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्य, सर्वनाम, निष्ठा।	
Unit – 3 . व्याकरण के तत्व	17
<ul style="list-style-type: none"> • संधि प्रकरणम् – अच्, हल् विसर्ग/कातंत्रव्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी के अनुसार। • समास प्रकरणम् – अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि। • प्रत्यय प्रकरणम् – तद्धित, कृदन्त। • कारक प्रकरणम् – लघु सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार। • धातुरूप प्रकरणम् – लघु सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार। • शब्दरूप प्रकरणम् – अजन्त, हलन्त, राम, हरि, सखि, गुरु, मति, नदी, धेनु। 	
Unit – 4 . भाषा विज्ञान एवं निरुक्त	20
<ul style="list-style-type: none"> • भाषा की परिभाषा एवं वर्गीकरण। • ध्वनि वर्गीकरण। • उच्चारण स्थान। • ध्वनि परिवर्तन एवं अर्थपरिवर्तन। • निरुक्त (अध्याय 1-2)। • विचार, आख्यात, उपसर्ग निपात, षड्भाव विकार। 	
Unit - 5 वाक्यपदीयम् प्रतिपाद्य	16
<ul style="list-style-type: none"> • वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड)। • स्फोट का स्वरूप। • शब्द ब्रह्म का स्वरूप। • शब्द ब्रह्म की शक्तियाँ। • स्फोट एवं ध्वनि संबंध। • शब्द-अर्थ सम्बंध। • ध्वनि के प्रकार। • भाषा के स्तर। 	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures	
Text Book(s) / Reference Books	
<ol style="list-style-type: none"> 1. लघु सिद्धान्त कौमुदी – भट्टोजि दीक्षित, भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, महेश सिंह कुशावाहा। 2. वाक्यपदीयम् – भर्तृहरि, डॉ. सूर्यनारायण शुक्ल। 3. निरुक्त – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, कपिलदेव शास्त्री साहित्य भण्डार। 4. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद। 5. तुलनात्मक भाषा शास्त्र – डॉ. मंगलदेव शास्त्री। 6. संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन – डॉ. भोलाशंकर व्यास, भारतीय ज्ञानपीठ काशी। 7. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र – डॉ. कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन। 8. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास (दोनों भाग) – पं. युधिष्ठिर मीमांसक। 9. कातंत्र व्याकरण – शर्ववर्मकृत भावसेन त्रिविध, त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर मेरठ। 10. जैन वाङ्मय का संस्कृत में योगदान : – डॉ. नेमीचन्द्र जैन, ज्योतिषाचार्य, आरा (विहार)। 	

Mayank

आनंदजी

Abhishek

[Signature]

Course code	Bhartiya Darshan (Paper – III)	L	T	P	C
MSANL20Y103	भारतीय दर्शन	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			
Course Objectives:					
<ul style="list-style-type: none"> • भारतीय दर्शन के विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना। • विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना। • छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना। • संस्कृत भाषा में निहित दर्शन के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना। • दार्शनिकता की कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना। • दर्शन के अध्ययन से आधुनिक एवं प्राचीन सामाजिक मूल्यों में समन्वय स्थापित करना। 					
Course Outcome:					
<ul style="list-style-type: none"> • भारतीयदर्शन की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना। • संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना। • दर्शन के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना। 					
Student Learning Outcomes (SLO):					
<ul style="list-style-type: none"> • छात्रों में दर्शन एवं भाषा कौशल का विकास होना। • छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना। • दर्शन के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना। • दर्शन विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना। • भारतीय दर्शन के विज्ञान में विशेषज्ञता के साथ छात्र को दक्ष बनाना। 					
• Unit - 1 भारतीय दर्शन का परिचय।					16
<ul style="list-style-type: none"> • भारतीय दर्शन का परिचय। • भारतीय दर्शन की अवधारणाएं • भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन • भारतीय दर्शन के उपागम • भारतीय दर्शन की मीमांसा 					
• Unit – 2 अवैदिक दर्शन का परिचय					18
<ul style="list-style-type: none"> • चार्वाक का परिचय, अवधारणा, स्वरूप तथा सिद्धान्त • जैन दर्शन का परिचय, अवधारणा, स्वरूप तथा सिद्धान्त • बौद्ध-दर्शन का परिचय, अवधारणा, स्वरूप तथा सिद्धान्त 					
Unit – 3 षड् दर्शन परिचय					17
षड् दर्शन परिचय – <ul style="list-style-type: none"> • न्याय दर्शन अवधारणा, स्वरूप तथा सिद्धान्त • सांख्य दर्शन अवधारणा, स्वरूप तथा सिद्धान्त • योग दर्शन अवधारणा, स्वरूप तथा सिद्धान्त • वैशेषिक दर्शन अवधारणा, स्वरूप तथा सिद्धान्त 					

Prakash

आनंद ओ

Ashish

[Signature]

<ul style="list-style-type: none"> मीमांसा दर्शन अवधारणा, स्वरूप तथा सिद्धान्त वेदान्त दर्शन अवधारणा, स्वरूप तथा सिद्धान्त 	
Unit – 4 समस्त दर्शनों में मीमांसा	20
समस्त दर्शनों में – <ul style="list-style-type: none"> प्रमाण मीमांसा। तत्व मीमांसा। आचार मीमांसा। 	
Unit - 5 दार्शनिक ग्रन्थों का परिचय	19
दार्शनिक ग्रन्थों का परिचय – <ul style="list-style-type: none"> सांख्यकारिका। सर्वदर्शनसंग्रह। योग सूत्र। तर्कभाषा। अर्थसंग्रह। वेदान्तसार। 	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures	
Text Book(s) / Reference Books	
<ol style="list-style-type: none"> सांख्यकारिका – उमाकान्त शुक्ल, ज्ञान प्रकाशन मेरठ,। भारतीय दर्शन – डॉ. उमेश मिश्र, हिन्दी समिति, उ.प्र. सरकार। भारतीय दर्शन – डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा। सांख्य तत्व कौमुदी – रमाशंकर भट्टाचार्य मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली,। तर्क भाषा – केशव मिश्र, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी। सर्वदर्शन संग्रह – डॉ. उमाशंकर शर्मा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी। पातंजल योग दर्शनम् – डॉ. सुरेशचंद श्रीवास्तव चौखम्बा सुरभारती वाराणसी,। अर्थसंग्रह – लोकाक्षिभास्कर, चौखम्बा ओरियन्टलिया, दिल्ली। योगसूत्रम् (व्यासभाष्य)– महर्षि पतंजलि, रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार। आप्तमीमांसा– आचार्य समन्तभद्र, वीरसेवा मंदिर, दिल्ली। तत्त्वार्थ सूत्र– आचार्य उमास्वामी, (फूलचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री) गणेश प्रसाद वार्णी शोध संस्थान, वाराणसी। परीक्षा मुख– आचार्य माणिकनन्दि, अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान, बीना। प्रमेयरत्न माला– लघु अनन्तवीर्य, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी। तीर्थकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, डॉ.नेमिचन्द्र शास्त्री। चार–भाग–आचार्य शान्तिसागर छाणी ग्रन्थमाला, पो. बुढाना, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। जैन न्याय, सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचंद शास्त्री, भारतीय ज्ञान पीठ, दिल्ली। जैन धर्म और दर्शन, मुनि प्रमाण सागर, श्री दि. साहित्य प्रकाशन. समिति बरेला जबलपुर। सत्यार्थ दर्शन (शब्दकोष) भाग 1–2–3, मुनि प्रबुद्धसागर, विद्याश्री ग्राफिक्स, जबलपुर चैतन्य चन्द्रोदय (चंद्रिका टीका) मुनि प्रणम्यसागर, आर्हत विद्या प्रकाशन, गोटेगाँव नरसिंहपुर तर्क संग्रह – अन्नम् भट्ट, बदरीनाथ शुक्ल, मोतीलाल बनारसीदास तर्क भाषा – केशव मिश्र, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी 	

Rayan

आनेद जे

Ashish

RK

Course code	Sanskrit Sahitya Avam Kavya Shastra (Elective) Paper – IV- I	L	T	P	C
MSANL20Y104	संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version 100 MARKS			
Course Objectives:					
<ul style="list-style-type: none"> • संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना। • विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना। • छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना। • संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना। • भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना। • भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना। • काव्य शास्त्रीय विषय वस्तु एवं तत्त्वों का मूल्यांकन, परीक्षण करना। 					
Course Outcome:					
<ul style="list-style-type: none"> • संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना। • संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना। • संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना। 					
Student Learning Outcomes (SLO):					
<ul style="list-style-type: none"> • छात्रों में संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्रीय भाषा कौशल का विकास होना। • छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना। • संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्रीय अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियां एवं प्रयोगों का विकास होना। • संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्रीय समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना। • संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र का विशेषज्ञता के साथ छात्र को दक्ष बनाना। • छात्रों को काव्य रचना एवं काव्य प्रस्तुति की योग्यता में दृढ़ बनाना। 					
Unit - 1 महाकाव्य तथा खण्ड काव्य परंपरा					19
<ul style="list-style-type: none"> • महाकाव्य तथा खण्ड काव्य परंपरा उद्भव एवं विकास • महाकाव्य एवं खण्डकाव्य लक्षण • महाकाव्य परिचय – बुद्धचरितम्, रघुवंशम्, किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् परिचय। • खण्डकाव्य परिचय – मेघदूतम्, ऋतुसंहारम्, नेमिदूतम् 					
Unit – 2 महाकाव्य तथा खण्ड काव्य परिचय					18
<p>महाकाव्य –</p> <ul style="list-style-type: none"> • रघुवंशम् (प्रथम सर्ग) • किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) <p>खण्डकाव्य –</p> <ul style="list-style-type: none"> • मेघदूतम् (पूर्व मेघदूत)। 					

आनंद जी

Unit - 3 कवि परिचय	17
<p>कवि परिचय -</p> <ul style="list-style-type: none"> ● महाकवि भास । ● महाकवि अश्वघोष । ● महाकवि कालिदास । ● महाकवि शूद्रक । ● महाकवि विशाखदत्त । ● महाकवि भारवि । ● महाकवि माघ । ● महाकवि हर्ष । ● महाकवि बाणभट्ट । ● महाकवि दण्डी । ● महाकवि भवभूति । 	
Unit - 4 नाट्य एवं गद्य साहित्य	20
<p>नाट्य साहित्य की रचनाएँ एवं रचनाकारों का परिचय ।</p> <ul style="list-style-type: none"> ● स्वप्नवासवदत्तम् । ● अभिज्ञान शाकुन्तलम् (1 अंक से 4 अंक तक) । ● उत्तररामचरितम् । ● मृच्छकटिकम् । <p>गद्य साहित्य की रचनाएँ एवं रचनाकारों का परिचय -</p> <ul style="list-style-type: none"> ● दशकुमार चरितम् । ● हर्ष चरितम् । ● कादम्बरी रचना एवं रचनाकार परिचय । 	
Unit - 5 काव्य शास्त्र के प्रमुख तत्त्व	16
<p>काव्य शास्त्र के प्रमुख तत्त्व -</p> <ul style="list-style-type: none"> ● काव्य लक्षण । ● काव्य प्रयोजन । ● काव्यहेतु । ● काव्य भेद । ● शब्द शक्ति । ● रस स्वरूप । ● रसदोष । ● काव्य गुण । ● रससम्प्रदाय । ● ध्वनि संप्रदाय । ● अलंकार संप्रदाय । 	

[Handwritten signature]

आनंदजी

Achishraf

[Handwritten signature]

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures		
Text Book(s) / Reference Books		
	<ol style="list-style-type: none"> 1. संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. जयकिशन प्रसाद, खण्डेलवाल, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा। 2. संस्कृत महाकाव्य की परम्परा – डॉ. केशवराम मुंसलगाँवकर, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी। 3. भारतीय साहित्य शास्त्र की रूपरेखा – डॉ. त्रयम्बक देश पाण्डे 4. संस्कृत शास्त्रों का इतिहास – डॉ. बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी 5. रघुवंशम् – महाकवि कालिदास, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी। 6. शिशुपालवधम् – महाकवि माघ, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी। 7. अभिज्ञान शाकुन्तलम् – महाकवि कालिदास, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी। 8. उत्तररामचरित्रम् – महाकवि भवभूति, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी। 9. काव्यप्रकाश – मम्मट व्याख्या – डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 10. काव्य प्रकाश – आचार्य विश्वेश्वर सिद्धांत शिरोमणि, ज्ञानमण्डल वाराणसी 11. काव्यशास्त्र – डॉ. सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा, वाराणसी 12. साहित्य दर्पण – डॉ. सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी। 13. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी। 14. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी। 15. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. रामजी उपाध्याय। 16. अलंकार चिंतामणि – आ. अजित सेन। 17. मृच्छकटिकम् – महाकवि शूद्रक, साहित्य भण्डार प्रकाशन, मेरठ। 18. बुद्धचरितम् – अश्वघोष, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी। 19. स्वप्नवासवदत्तम् – महाकवि भास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी। 20. नेमिदूतम् – विक्रम कवि, संपा. डॉ. सागरमल जैन, पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी 	

Prakash

आनंद जी

Ashish

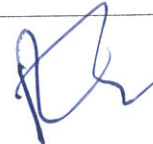
R

Course code	Ancient Manuscriptology and Scripts (Elective) Paper – IV- II	L	T	P	C
MSANL20Y105	प्राचीन पाण्डुलिपि विज्ञान और लिपियाँ	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version 100 MARKS			
Course Objectives:					
<ul style="list-style-type: none"> ● प्राचीन पाण्डुलिपि विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना। ● विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना। ● छात्रों में प्राचीन पाण्डुलिपि के प्रति रुचि जाग्रत करना। ● संस्कृत भाषा की प्राचीन पाण्डुलिपियों के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना। ● प्राचीन पाण्डुलिपि कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना। ● भाषा से संबंधित प्राचीन पाण्डुलिपियों को दोषों से दूर करना। 					
Course Outcome:					
<ul style="list-style-type: none"> ● संस्कृत भाषा की प्राचीन पाण्डुलिपियों क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना। ● संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता के साथ प्राचीन पाण्डुलिपियों का ज्ञान प्रदान करना। ● प्राचीन पाण्डुलिपि विज्ञान के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना। ● पाण्डुलिपियों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए जागरूक करना। 					
Student Learning Outcomes (SLO):					
<ul style="list-style-type: none"> ● छात्रों में प्राचीन पाण्डुलिपि वाचन कौशल का विकास होना। ● छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना। ● प्राचीन पाण्डुलिपियों अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना। ● प्राचीन पाण्डुलिपि विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना। ● प्राचीन पाण्डुलिपियों के अनुवाद एवं वाचन के लिए व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ छात्रों को दक्ष बनाना। 					
Unit - 1 पाण्डुलिपि विज्ञान					16
<ul style="list-style-type: none"> ● पाण्डुलिपि विज्ञान का परिचय। ● पाण्डुलिपियों का महत्व। ● पाण्डुलिपियों का संरक्षण। 					
Unit – 2					20
<ul style="list-style-type: none"> ● पाण्डुलिपि ग्रंथ रचना प्रक्रिया। ● पाण्डुलिपि के पाठ। ● पाठविकृति एवं उसके कारण। 					




आनंद सिंह

Ashishay



Unit – 3 संपादन प्रक्रिया	17
<ul style="list-style-type: none"> • संपादन प्रक्रिया। • काल – निर्धारण। • शब्द और अर्थ की समस्या। • पाठालोचन। • पाण्डुलिपि संबंधी पारिभाषिक शब्दावली। 	
Unit – 4 पाण्डुलिपियां	18
<ul style="list-style-type: none"> • राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन। • उद्देश्य • परियोजना। • कार्य – सम्पादन, सूचीकरण। • प्रकाशन। • आधुनिक पाण्डुलिपि संग्रहालय। 	
Unit - 5 लिपि-परिचय	19
<ul style="list-style-type: none"> • लिपि-परिचय। • लिपि का उद्भव और विकास। • मुख्य लिपियों का परिचय। • लिपियों का इतिहास। • ब्राह्मी, खरोष्ठी, शारदा, ग्रंथ, नेवारी, देवनागरी परिचय। 	

 आनंद सिंह Ashish Singh



# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text Book(s) / Reference Books			
	<ol style="list-style-type: none"> 1. अशोक के अभिलेख : डॉ. राजबली पाण्डेय, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी। 2. पाण्डुलिपि विज्ञान- डॉ. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर। 3. पाण्डुलिपि परिचय – अयोध्या चन्द्र दास. चन्द एण्ड कंपनी लि. रामनगर, नई दिल्ली। 4. पाण्डुलिपि विज्ञान – रामगोपाल शर्मा दिनेश। 5. शोधप्रविधि तथा पाण्डुलिपि विज्ञान- प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र। 6. पाण्डुलिपि : सूचीकरण एवं सम्पादन – डॉ. महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज', प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, (विहार)। 7. पाठालोचन : सिद्धान्त और प्रक्रिया – मिथिलेश कत्रे 8. पाठानुसंधान – डॉ. सियाराम तिवारी। 9. भारतीय पाठालोचन की भूमिका – डॉ. एस. एम. कत्रे। 10. प्राचीन लिपिमाला – डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा। 11. भारतीय लिपियों की कहानी – गुणाकर मुले, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली। 12. ब्राह्मी लिपि प्रवेशिका – रवीन्द्र कुमार वशिष्ठ, कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली। 13. शारदा लिपि दीपिका – डॉ. श्रीनाथ तिवक्कू, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली। 14. ब्राह्मी लिपि चंद्रिका – डॉ. महावीर प्रभाचंद्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2019। 		

आनंद जी

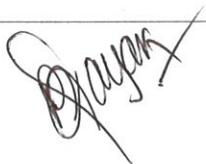


Abhishek

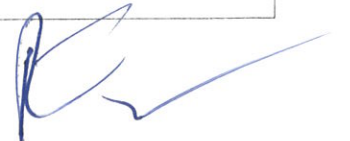


Course code	Vishesh Kavi : Mahakavi Kalidas (Elective) Paper – IV- III	L	T	P	C
MSANL20Y106	विशेष कवि : महाकवि कालिदास	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version 100 MARKS			
Course Objectives:					
<ul style="list-style-type: none"> संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना। विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना। छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना। संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना। भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना। भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना। काव्य शास्त्रीय विषय वस्तु एवं तत्वों के मूल्यांकन, परीक्षण करना। 					
Course Outcome:					
<ul style="list-style-type: none"> संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना। संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना। संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना। 					
Student Learning Outcomes (SLO):					
<ul style="list-style-type: none"> छात्रों में संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्रीय भाषा कौशल का विकास होना। छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना। संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्रीय अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना। संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्रीय समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना। संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र की विशेषज्ञता के साथ छात्र को दक्ष बनाना। छात्रों को काव्य रचना एवं काव्य प्रस्तुति की योग्यता में सम्पन्न बनाना। 					
Unit - 1 विक्रमोर्वशीयम्		19			
विक्रमोर्वशीयम् <ul style="list-style-type: none"> प्रस्तुत कृति का परिचय। कृति का वैशिष्ट्य। 					
Unit – 2 रघुवंशम्		18			
रघुवंशम् <ul style="list-style-type: none"> प्रस्तुत कृति का परिचय। महाकाव्य की विषय वस्तु सर्ग के अनुसार। 					
Unit – 3 अभिज्ञानशाकुन्तलम्		17			
अभिज्ञानशाकुन्तलम् <ul style="list-style-type: none"> प्रस्तुत नाटक का परिचय। नाटक की विषय वस्तु अंक के अनुसार। 					

अनंदजन







Unit – 4 मेघदूतम्	20
मेघदूतम् <ul style="list-style-type: none"> • मेघदूतम् का परिचय विषय वस्तु के अनुसार। • उत्तर मेघ का परिचय। 	
Unit - 5 कुमारसम्भवम्	16
कुमारसम्भवम् <ul style="list-style-type: none"> • कुमारसम्भवम् का परिचय। • कुमारसम्भवम् (पंचमसर्ग) का वैशिष्ट्य। 	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures		
Text Book(s) / Reference Books		
<ol style="list-style-type: none"> 1. विक्रमोर्वशीयम्, पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारतीय प्रकाशन, वाराणसी। 2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायण लाल विजयकुमार, इलाहाबाद। 3. कालिदास ग्रन्थावली, पं. सीताराम चतुर्वेदी, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान (लखनऊ) 4. महाकविकालिदास, रमाशंकर तिवारी, चौखम्बा सुरभारतीय प्रकाशन, वाराणसी। 5. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी। 6. संस्कृत सुकवि समीक्षा, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी। 7. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, प्रो. रामजी उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी। 8. संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी। 		

आनंद

[Signature]

Ashish

[Signature]

Course code	Research Methodology and Project Work Paper -V	L	T	P	C
MSANL20Y107	शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य	4	0	6	10
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			
Course Objectives:					
<ul style="list-style-type: none"> • शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य के लिए व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना। • विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना। • छात्रों में संस्कृत साहित्य एवं शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य के प्रति रुचि जाग्रत करना। • संस्कृत भाषा की शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना। • शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य के लिए भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना। • भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना। 					
Course Outcome:					
<ul style="list-style-type: none"> • शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य के लिए संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना। • शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य के लिए संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना। • शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य के लिए व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना। 					
Student Learning Outcomes (SLO):					
<ul style="list-style-type: none"> • छात्रों में शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य के लिए भाषा कौशल का विकास होना। • छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना। • शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य में संस्कृत के भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना। • शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य के लिए भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना। • शोध-प्रविधि और परियोजना कार्य के लिए व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ छात्र को दक्ष बनाना। 					
Unit - 1 शोध का स्वरूप					20
शोध का स्वरूप : सैद्धान्तिक पक्ष -- <ul style="list-style-type: none"> • शोध का प्रयोजन। • शोध की व्युत्पत्ति और परिभाषा। • शोध : तत्त्व, क्षेत्र, दृष्टि, पद्धति, उपस्थापन। • शोध के प्रयोजन। • शोध के प्रकार- 1. साहित्यिक शोध। 2. लोकसाहित्यिक शोध। 3. अन्तःशास्त्रीय शोध। 4. तुलनात्मक शोध। 					

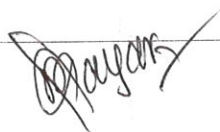
आनंदजी

(Signature)

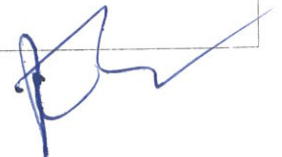
(Signature)

(Signature)

Unit – 2 शोध पद्धतियाँ –	16
<p>शोध पद्धतियाँ –</p> <ul style="list-style-type: none"> • वर्णनात्मक पद्धति। • ऐतिहासिक पद्धति। • तुलनात्मक पद्धति। • सर्वेक्षण आधारित पद्धति। • गुणात्मक और मात्रात्मक पद्धति। • लोकतात्त्विक पद्धति। • भाषा केन्द्रित पद्धति। • आलोचनात्मक पद्धति। • मौखिक पद्धति। • अन्य 	
Unit – 3 शोध की प्रक्रिया	17
<p>शोध की प्रक्रिया –</p> <ul style="list-style-type: none"> • विषय का चयन • विषय का निर्धारण : संकल्पना और महत्त्व • शोध की समस्या (विषयगत) • शोध की रूपरेखा • सामग्री संकलन, विश्लेषण • सामग्री संकलन के स्रोत (प्राथमिक, द्वितीयक तथा प्रकाशित– अप्रकाशित आदि) • पुस्तकालय, इंटरनेट, वेबसाइट, फील्ड वर्क • कार्ड बनाना, साक्षात्कार, प्रश्नावली, सामग्री का विवेचन–विश्लेषण 	
Unit – 4 शोध की प्रतिपादन पद्धति	18
<p>शोध की प्रतिपादन पद्धति –</p> <ul style="list-style-type: none"> • सामग्री का विभाजन तथा संयोजन (अध्याय, उपशीर्षक और अनुपात)। • तर्क–पद्धति, निरूपण और तत्त्वान्वेषण। • प्रामाणिकता : अन्तःसाक्ष्य और बहिःसाक्ष्य। • उद्धरण और सन्दर्भोल्लेख (पाद टिप्पणी लेखन)। • भूमिका और उपसंहार लेखन। • परिशिष्ट (अतिरिक्त आवश्यक सूचनात्मक सामग्री संकलन)। • सन्दर्भ ग्रन्थ सूची। • पत्र–व्यवहार और अन्य का उल्लेख। • विषयों, नामों आदि की अनुक्रमिका, अन्य सामग्री (चित्र–स्केच) आदि प्रस्तुत करने की विधियाँ। 	



आनंदसिंह Ashish



Unit - 5 कम्प्यूटर का सामान्य ज्ञान	19
कम्प्यूटर का सामान्य ज्ञान – <ul style="list-style-type: none"> • कम्प्यूटर : परिचय और महत्त्व • कम्प्यूटर : संरचनात्मक स्वरूप • इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय • इंटरनेट समय मितव्ययिता का सूत्र • इंटरनेट का ऐतिहासिक परिचय • इंटरनेट कार्य प्रणाली और सुविधाएँ • मशीनी अनुवाद। 	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text Book(s) / Reference Books			
	<ol style="list-style-type: none"> 1. साहित्यिक शोध के आयाम-- डॉ. शशिभूषण सिंहल, आर्य बुक डिपो, नईदिल्ली। 2. शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्य विधि – डॉ. बैजनाथ सिंहल, दि मैकमिलन ऑफ इण्डिया लिमि. दिल्ली। 3. अनुसंधान – सत्येन्द्र, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी। 4. शोध-प्रविधि, डा. विनय मोहनशर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। 5. शोध –प्रविधि, डा. हरिश्चन्द्र वर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला। 6. कम्प्यूटर और हिन्दी – हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली। 7. कम्प्यूटर : सिद्धान्त और तकनीक, राजेन्द्रकुमार, पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली। 8. कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग एण्ड आपरेटिंग गाइड, पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली। 		

Ajay

अनंदजी

Ashishraj

AL

Course code	Subjective Presentation and Comprehensive viva	L	T	P	C
MSANL20Y108	विषय प्रस्तुति एवं विस्तृत मौखिकी	0	0	6	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			
Course Objectives:					
<ul style="list-style-type: none"> • व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना। • विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना। • छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना। • संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना। • भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना। • भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना। • शोध कार्य को बढ़ावा देना। 					
Course Outcome:					
<ul style="list-style-type: none"> • संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना। • संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना। • व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना। • शोध कार्य एवं अनुसंधान का ज्ञान प्रदान करना। 					
Student Learning Outcomes (SLO):					
<ul style="list-style-type: none"> • छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना। • छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना। • भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना। • भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना। • व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ छात्रों को दक्ष बनाना। • शोध कार्य की समस्याओं का निदान होना। • शोध कार्य को गति प्रदान करना। 					
<p>प्रत्येक विद्यार्थी प्रश्नपत्र संख्या एक से पाँच तक पढ़े गये विषयों में से किसी एक विषय पर प्रस्तुति और विस्तृत मौखिकी देना होगी।</p>					

आनंदजीव

Qayan

Ashtabhai